साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 46, अक्टूबर(प्रथम) , 2018

डॉ० रिक लिंडल द्वारा रचित अंग्रेजी पुस्तक 'The Purpose' के हिंदी अनुवाद का अगला भाग

लेखक - डॉ० रिक लिंडल

अनुवादक - डॉ० अनिल चड्डा

गतांक से आगे

भाग III

अध्याय 9

पाप के रास्ते पर

वृद्ध आत्मा से रिक्की की बातचीत के बाद कई वर्ष बीत गये हैं, और 1993 की वसंत में, रिक्की विदेश में 20 वर्ष रहने के पश्चात आइसलैंड लौट आया. यह एक हसरत पूर्ण होने की तृप्ति थी; एक तरह की खुजली जो वर्षों के साथ मजबूती से बढ़ती रही थी - अपने उत्तरी ध्रुव के फूलों वाले, ग्लेशियर और आधी रात के सूर्य वाले जन्मस्थल पर लौटने का खिंचाव. 1972 के पतझड़ में छोड़ने के कारण थे, लेकिन अब फिर से यह देखने का समय आ गया था कि कितना पानी था और अपने अतीत की यादों की इच्छाएं, जो उसकी अनुभूतियों में एक ताज़ी हवा की तरह बह रही थीं, उसे अपने जन्मस्थल की ओर लौटने का इशारा कर रहीं थी.

वृद्ध आत्मा के साथ उसकी पिछली बैठक के बाद और वृद्ध आत्मा की यह टिप्पणी सुनने के बाद कि कोई भी मृत्यु इत्तेफाक नहीं होती, रिक्की के लिये इस अवधारणा को समझने में बहुत मुश्किल हो रही थी. इसने रिक्की को जीवन के उस अंधकारमय पहलु के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया, जब लोग बहुत ही हिंसक तरीकों से मृत्यु को प्राप्त होते हैं. रिक्की को उसके वृद्ध आत्मा के साथ हुए वार्तालाप से यह समझ में आया था कि अपनी मृत्यु को प्राप्त होना कभी भी आकस्मिक नहीं था, जब उसे आध्यात्मिक आयाम में आत्मा के नजरिये देखा जाये तो, लेकिन एक भीषण और हिंसक मृत्यु, धरती पर हमारे दृष्टिकोण से, सम्पूर्ण रूप से अमानवीय लगती थी. उसे यह लगता था कि किसी मनुष्य को ऐसा अपराध करने के लिये जो प्रेरणा होती है वह अमानवीय होती है और एक आत्मा के लिये पूरी तरह से अस्वाभाविक होती है जिसका मूलतत्व प्रेम होता है. वह अक्सर सोचा करता था कि वैसा कैसे हो सकता था, और अपने आप से पूछता था कि क्या यह पाप के कृत्य हैं?

पिछले कुछ वर्षों में, पाप की प्रकृति पर रिक्की का कौतूहल बढ़ता जा रहा था और नकारात्मक भावनाओं के बारे में जानने से क्या उद्देश्य पूरा होता था, जो वृद्ध आत्मा ने कहा था कि घरती पर जीवनकाल के लिये सबसे पहला कारण था.

यद्दपि यह 1993 का वर्ष था, रिक्की को अभी भी, जब वह इंग्लैंड में था तो, स्पष्ट रूप से तेरह वर्ष पहले की एक सर्दी की कड़कीली सुबह याद आ रही थी. यह 1980 का पतझड़ था, सही सही कहो तो दिसम्बर 9. वह यॉर्क विश्वविद्यालय के एक कैफेटेरिया में बैठ कर नाश्ता कर रहा था, जब रेडियो पर संवाददाता ने घोषणा की, ".....जोहन लेनन की मृत्यु हो गई है. उसे कल रात मेनहट्टन में अपने घर के दरवाजे पर गोली मार दी गई और उसे अस्पताल ले जाते हुए अम्बुलेंस में उसकी मृत्यु हो गई. उस समय रिक्की ने सोचा, ओह मेरे भगवान.....ऐसा कैसे हो सकता था! जोहन लेनन धरती पर शान्ति ही तो चाहता था. इसका क्या अर्थ है. क्या यह केवल एक विक्षिप्त मनुष्य द्वारा किया गया पाप कर्म है, या कोई स्वतंत्र पाप की शक्ति है, एक पाप की चेतना जिसने हत्या का भयंकर कृत्य करने के लिये मजबूर किया था? पाप की प्रकृति के बारे में इस तरह के प्रश्न रिक्की के दिमाग में बहुत वर्षों तक भटकते रहे, जब कि पाप की घटनाएं सारे विश्व में निरंतर होती रहीं.

जैसे-जैसे समय बीतता गया, रिक्की को इस मुद्दे पर ज्यादा गंभीरता से देखने की आवश्यकता थी. विज्ञान-उन्मुख मनोवैज्ञानिक, जो वह अब था, होने के कारण, उसे पहले तो यह लगा कि इस विषय को शोध के दृष्टिकोण से देखे. और, जैसे-जैसे उसने इस बारे में सोचा, सबसे पहली रूकावट इसकी कार्यकारी परिभाषा पर पहुँचने की थी, पाप को कैसे परिभाषित किया जाये - यदि वैसा संभव था तो. और दूसरी रुकावट इसे परिभाषित करना था कि एक पाप के कृत्य को कैसे परिभाषित किया जाये.

बाद में, वह उन परिस्थितियों को समझने की कोशिश करेगा जो मनुष्यों को पाप कर्म करने की ओर ले जाती हैं.

परिभाषा

पुस्तकालय में कुछ प्रारंभिक शोध करने के बाद, उसे लगा कि मतैक्य यही संकेत देता था कि पाप को उत्कृष्ट रूप में एक 'सम्पूर्णता' की तरह वर्णन किया जा सकता है, क्योंकि ऐसा संभव नहीं लगता कि कोई थोड़ा सा पापी होगा, या करीब-करीब पापी होगा, या किसी घटना के लिये लगभग पापी होगा. फिर भी, जब उसने इस बारे में और सोचा, तो उसे यह लगा कि एक कृत्य जो 'बुरा नहीं है' आवश्यक नहीं है कि 'अच्छा', 'बहुत अच्छा', या 'अत्यधिक अच्छा' ही हो. इसलिये, इनमें अनुपात होना चाहिये. उदाहरण के लिये, एक कृत्य 'अच्छा', 'बहुत अच्छा', या 'अत्यधिक अच्छा' हो सकता है - जहाँ एक 'अत्यधिक अच्छा' कृत्य 'पवित्र' कृत्य का पर्यायवाची होगा. और, इसी तरीके से, एक कृत्य 'बुरा', 'बहुत बुरा', या 'अत्यधिक बुरा' हो सकता है - जहाँ अत्यधिक बुरा कृत्य 'पाप' का पर्यायवाची होगा. एक तुलनात्मक राय कि किस सीमा तक कोई कृत्य 'अच्छा' या 'बुरा' माना जायेगा एक अबाध क्रम पर कहीं पर भी आ सकता है, सिवाय पराकाष्ठा के छोर तक, जहाँ 'अत्यधिक बुरा' कृत्य पाप होगा, और एक 'अत्यधिक अच्छा' कृत्य पवित्र होगा.

अब, निरंतरता को एक छोर पर पवित्रता की अवधारणा बना कर और दूसरे छोर पर पाप की अवधारणा बना कर, अंतिम बिंदुओं को ज्यादा सही तरीके से परिभाषित करने की आवश्यकता होगी. रिक्की के पुस्तकालय के शोध ने खुलासा किया कि ऐतिहासिक रूप से पवित्रता को कई दर्शनशास्त्रियों ने स्पष्ट किया है, प्लेटो और एरिस्टोटल के समय से ही, और इसी तरह से पाप की अवधारणा को, लेकिन कुछ कम. बाद के इतिहास में पाप एक सनक बन गया, विशेषतया जुडाइस्म, क्रिश्चियनिटी, और इस्लाम के एकेश्वरवादी धर्मों में.

शोध से यह भी पता चला कि पाप की अवधारणा घटनाओं के बहुत विस्तृत क्षेत्र से सम्बन्धित है, जिसमें प्रकृति के अनेक कृत्य शामिल हैं, साथ ही साथ विशिष्ट रूप से मनुष्यों के हाथों से किये गये कृत्यों के क्षेत्र से भी. इसलिये इस अध्ययन के क्षेत्र को और सीमित करने के लिये, रिक्की ने निर्णय लिया कि अपने उद्देश्य के लिये, वह पाप को मनुष्यों द्वारा जानबूझ कर किये गये गल्त कार्यों और गहन अनैतिकता (अर्थात पवित्रता के एकदम विपरीत) तक ही सीमित रखेगा.

पाप की इस परिभाषा में से, फिर, उन्हें निकाल दिया गया जिसे लोग 'प्राकृतिक' पाप कहते हैं, अर्थात (क) जलवायु संबंधी आपदाएं, जैसे कि भूचाल, बाढ़, ज्वारीय लहरें, बवंडर, जवालामुखी विस्फोट, अकाल, हिमस्खलन, बिजली का गिरना, आसमान से उल्कापात होना, इत्यादि, और (ख) प्रकृति के कृत्य जिसका सम्बन्ध जातियों या एक जीव के जीवित रहने से है, जैसे जब कोई जावनर अपने भोजन के शिकार के लिये हिंसा करता है, कोशिकमय जीवाणु जो बीमारी में अपने मेजबान की मृत्यु का कारक बन जाता है (जैसे कि ऐड्स में), आनुवंशिक असामान्यता की वजह से खराबी जो मनुष्य में ख़ास बीमारियाँ पैदा करती हैं (जैसे कि सिकल-सेल रक्ताल्पता, डाउन सिंड्रोम, अल्झाइमर्स बीमारी, इत्यादि).

उसने यह भी निर्णय लिया कि वह स्वतन्त्र पाप शक्तियों, या एक बाहरी चेतना, जिन्होंने मनुष्यों को पाप कर्म करने के लिये मजबूर किया था, के सवाल को इस समय के लिये एक तरफ छोड़ देगा.

यह एक व्यक्ति का मस्तिष्क है, न कि उसका शत्रु या विरोधी,
जो उसे पाप के रास्ते की ओर आकर्षित करता है.

बुद्धा

इन अहर्ताओं को मस्तिष्क में रख कर, पाप की परिभाषा अब उन कृत्यों तक सीमित हो गई थी जो विशेषतया मनुष्यों द्वारा किये जा रहे थे और जो जानबूझ कर किये गये कार्यों और अनैतिकता से संबंधित थे. अस्थाई रूप से, इनमें फिर यह शामिल थे (क) वह कृत्य जिनसे मनुष्य मारे गये, जैसे हत्या और अनुमोदित कत्ल (उदाहरण के लिये शासन द्वारा किये गए वध और युद्ध क्षेत्र में की गई हत्यायें) (ख) भेदभाव के कृत्य और ऐसा अपमान जिसे लोगों की मनोवैज्ञानिक सेहत को कम करने के लिये रूप-रेखा दी जाती है (उदाहरण के लिये डराना), और (ग) दुर्भावनापूर्ण कृत्य जो पीड़ा या दुःख पहुंचाते हैं (उदाहरण के लिये प्रताड़ना, वैवाहिक शोषण, और यौन शोषण). इस संक्षिप्त परिभाषा पर पहुँचने के बाद, रिक्की ने अपने मनन को विशेषतया मनुष्यों द्वारा किये गये कृत्यों और घटनाओं तक सीमित रखा.

पाप कृत्यों के उदाहरण

जब रिक्की ने अपने आसपास उन घटनाओं का जायजा लिया जो उसे संसार में पाप के कृत्य लग रहे थे, तो सबसे पहले उसका ध्यान राजनितिक क्षेत्र की ओर गया. विशेषकर उन घातक संघर्षों पर जो तब हो जाते थे जब राजनीतिज्ञ या देशों के मुखिया अपने मतभेदों को नहीं सुलझा पाते थे. इन घटनाओं में, उस समय की प्रचलित नीति युद्ध की घोषणा कर देना होती थी और फिर अपने युवा सैनिकों को लड़ाई के लिये भेज देना, जब तक कि एक यथेष्ट संख्या का वध न हो जाए या तो अपने विरोधी को हराने, एक समझौते को प्रस्तावित करने के लिये, या लड़ाई के मैदान से वापिसी के लिये. रिक्की विस्मित था, क्या यह पाप के कृत्य हैं? और, यदि ऐसा है तो, तुम किसे दोष दोगे - राजनीतिज्ञों को, सैनिकों को, या उन देश के नागरिकों को जो उन्हें युद्ध पर भेजने के लिये समर्थन देते हैं?

दूसरी तरफ, रिक्की ये अंदाजा लगाता रहा, कि हो सकता है कि यह बहस भी की जा सकती है कि देशों को कभी-कभी ग्रह से पाप का परिष्करण करना चाहिये, घातक संघर्षों के माध्यम से, ताकि एक सार्वजानिक अच्छाई का वर्चस्व बन सके? या दूसरे शब्दों में, कभी-कभी एक देश को अपने नागरिकों को पाप के कृत्य करने के लिये कहना चाहिये, जैसे कि दूसरों की हत्या करना, ताकि जो अच्छा, शालीन, और पवित्र समझा जाता है, उसे सुरक्षित रखा जाये.

यह बुनियादी प्रश्न हैं. जैसे-जैसे रिक्की ने इन मुद्दों के बारे सोचना जारी रखा, उसने अपने-आप में सोचा, भगवान का शुक्र है कि शीत युद्ध समाप्त हो गया है, इसके साथ ही संभावित आणविक युद्ध या एक आणविक आपदा की चिंता भी. (केवल तीन वर्ष पहले बर्लिन की दीवार को गिरा दिया गया था और सैंकड़ों आणविक प्रक्षेपास्त्र जो रूस और मित्र राष्ट्रों को उड़ा देने के लिये तैयार थे अब ध्वस्त करने की तैयारी हो रही थी.) अब वह इस वास्तविकता से सचेत था कि अमेरिका ही केवल ऐसा राष्ट्र था जिसने कभी आणविक अस्त्र तैनात किये थे. उन्होंने ऐसा दूसरे विश्वयुद्ध के आखिरी दिनों में किया था जब उन्होंने युद्ध को समाप्त करने की कोशिश में एक बम्ब हिरोशिमा पर और दूसरा नागासाकी पर गिराया था. कुछ लोगों के दिमाग में, यह उसके प्रतिशोध में था जब जापान के सैनिकों ने - जिनमें से ज्यादातर एक नये विकसित ड्रग मेथामफेटामाइन (गली का नाम 'क्रिस्टल मेथ') के पीछे थे, जिसे जापान में उस समय पायलटों का साहस बढ़ाने के लिये विकसित किया गया था, पर्ल हारबर में अमेरिका के समुद्री जहाजों पर हवाई कमिकाज़े आत्मघाती हमले किये थे, जिससे लगभग 2400 अमेरिकी फ़ौज के कर्मचारी मारे गये थे. अमेरिका ने जो बम हिरोशिमा और नागासाकी शहरों पर गिराये थे उनसे लगभग 200,000 असैनिक जापानी मारे गये थे. रिक्की ने सोचा, यह युद्ध के कृत्य थे. दोनों ही कृत्य पाप थे, जैसा कि हत्या के अंतिम निष्कर्ष में होता है. लेकिन दो बड़े शहरों के नाश की अमेरिकन प्रतिक्रिया एक जानबूझ कर की गई गल्ती और गहन अनैतिकता लगती थी! लेकिन किसी पर दोष मढ़ना क्या मेरे लिये उचित था?

फिर उसने सोचा, शायद मुझे भौतिकवैज्ञानिकों को दोष देना चाहिये जिन्होंने एटम बम को विकसित किया था? वह जानते थे कि इसको एक अस्त्र की तरह इस्तेमाल करने की मंशा थी. तब फिर से, उस समय अमेरिकनों और जर्मनों के बीच आणविक बम को विकसित करने के लिये एक हथियारों की होड़ लगी हुई थी. यदि अमेरिकी होड़ में न जीतते, तो जर्मनों को, और हिटलर को, इसे इस्तेमाल करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होती. लेकिन यह भी सोचो, अमेरिकियों को भी नहीं हुई. रिक्की को बहुत काम करना था. स्पष्ट रूप से इसका अर्थ निकालने के लिये कि इस दृष्टांत में पाप क्या है के बारे में बहुत कुछ सोचना था और बहुत कुछ करना था.

फिर भी, यही कुछ नहीं था, और भी बहुत कुछ था - बहुत कुछ. जब युद्ध समाप्ति के करीब था, यूरोप से यह समाचार आने प्रारंभ हो गये कि जर्मनों ने सारी ज्यूइश जनसंख्या को, और साथ ही साथ समलैंगिकों और कोई भी जो मानसिक रूप से विलंबित या शारीरिक रूप से विकलांग हो को, समाप्त करने की ठानी थी. सभ्य संसार अविश्वास और दहशत से सन्न रह गया. नरसंहार, केवल इसी लक्ष्य से करना कि लोगों को बिना किसी खास राजनैतिक लाभ के ख़त्म कर देना, मनुष्य के इतिहास में पहली बार पाप के एक नये रूप में उभर कर आया था.

जब रिक्की ने इस पर विचार किया, तो उसने अपने-आप से सोचा, कि मैं अपने पूर्व जन्म में, और मेरा परिवार भी, एक पोलिश ज्यू के रूप में इस नरसंहार का शिकार बना था. नाजियों को ऐसा करने के लिये धरती पर किस चीज ने प्रेरित किया होगा?

हन्नाह अरेंद्त, जिसने ज्यूइश नरसंहार के बारे में अपनी पुस्तकों[57] में लिखा था, ने तर्क दिया था कि नाज़ी जर्मनी ने एक नया 'उग्र सुधारवादी' पाप प्रस्तुत किया था. उसने अडोल्फ़ एइचमनन पर मुकदमे की सुनवाई देखी थी जो युद्ध के बाद जेरूसलम में हुआ था. वह एक उच्च-पदस्थ नाज़ी अधिकारी था जिसने ज्युओं को अपने वरिष्ठ अधिकारी, हेंरीच हिम्म्लेर, के इस आदेश के बावजूद कि वह ऐसा करना बंद कर दे, युद्ध के अंतिम दिनों में भी बंदी शिविरों में भेजना जारी रखा था. सुनवाई के दौरान, जब एइचमनन से पूछा गया कि उसने ऐसा क्यों किया था, उसने उत्तर दिया कि वह उसका कर्तव्य था, अर्थात, जो भी सही था उसे करने का उसका नैतिक कर्तव्य था और, शायद, जिसे वह सोचता था कि वह एक पवित्र काम था.

हन्नाह अरेंद्त ने तर्क दिया कि नाजियों को न केवल नैतिक गिरावट का अनुभव हुआ था बल्कि उन्होंने नैतिक विपरीतता भी अनुभव की थी: एक नैतिक विपरीतता जहाँ एक नैतिक कृत्य - एक पवित्र कृत्य - अपने ऊपर ही उल्टा पड़ गया था. ज्युओं और समलैंगिकों को मारना एक पवित्र काम बन गया था, और वह प्रत्येक 'अच्छे' नागरिक का कर्तव्य था. उसने यह तर्क दिया कि नाजी एक नैतिक जड़ता के पागलपन के रूप में चले गये थे, जिसमें से पाप का नया रूप उजागर हुआ जो बाहरवीं सदी में तब तक अनजान था.

(रिक्की के शोध से खुलासा हुआ कि आधुनिक इतिहास में दूसरे नरसंहार भी हुए थे, दूसरे विश्वयुद्ध के पहले भी और बाद में भी, लेकिन वह नरसंहार प्रत्यक्षत: राजनीति से प्रेरित थे, यद्दपि उतने ही पापमय. उदाहरण के लिये, 1915 और 1918 के मध्य में तुर्की में आर्मेनियन नरसंहार ने 1.5 मिलियन अर्मेनियाईयों को योजनाबद्ध तरीके से प्रत्यक्ष रूप से तुर्की के पूर्व की ओर की सीमा के विस्तार के लिये भूमि पर कब्ज़ा करने के लिये मरते हुए देखा था. दूसरे उल्लेखनीय नरसंहारों में 1950वें और 1960वें दशकों के अतिकाल में चीन की सांस्कृतिक क्रांति जिसमें 30 मिलियन लोग मारे गये थे, और 1970 के मध्य और अतिकाल में कम्बोडिया के पोल पॉट और खमेर रूज़ द्वारा मारे गये 2 मिलियन कम्बोडियाई, जो जनसंख्या का दो-तिहाई हिस्सा था!)

---

57 द ओरिजिंस ऑफ़ टोटलीटरियनिस्म. क्लीवलैंड: वर्ल्ड पब्लिशिंग कंपनी, 1951, और एइच्मन्न इन जेरूसलम: ए रिपोर्ट ऑन द बनालिटी ऑफ़ ईविल. न्यू यॉर्क: पेंगुइन बुक्स, 1963

मनुष्य कभी भी पाप को इतनी सम्पूर्णता और ख़ुशी से नहीं करते
जितना कि वह धार्मिक आस्था के कारण करते है.

ब्लेस पास्कल

रिक्की विस्मित था, यह कैसे संभव था? लोगों की इतनी अधिक संख्या को विपरीत नैतिकता को गले लगाने के लिये कैसे संगठित किया जा सकता है? ज्यू और जर्मन, जिनमें से अधिकतर समलैंगिक, शारीरिक रूप से विकलांग, और मानसिक रूप से विक्षिप्त थे, तब तक जर्मनी में कैसे एक साथ रह रहे थे. लेकिन जब उसने इस बारे में विचार किया, तो उसे स्पष्ट हुआ कि नैतिक विपरीतता एक सामान्य स्वरूप का पाप था. जब कि ज्यूओं का संहार युद्ध समाप्त होने के बाद बंद हो गया था, समलैंगिकों का संहार विश्व के कई देशों की नीति रहा. नैतिक विपरीतता का एक और उदाहरण उनकी नसबंदी था करना जिनका विकास देर से हुआ था - एक नीति जो 1970 तक अमेरिका और कनाडा में अपनाई जाती रही थी. रिक्की ने निष्कर्ष निकाला, अफ़सोस की बात है, कि नैतिक विपरीतता पाप का एक आम रूप है और आज तक भी जीवित है!

नैतिक विपरीतता पाप का एक आम रूप है,
और आज भी जीवित है!

और अंत में, अभी हाल ही की बात है, एड्स महामारी से पीड़ितों के साथ काम करते हुए, पाप का मुद्दा धार्मिक कट्टरपंथियों द्वारा रिक्की के ध्यान में लाया गया था जिन्होंने यह दावा किया था कि ईश्वर एड्स को संसार में इसलिये लाया था कि समलैंगिकों को उनके अप्राकृतिक व्यवहार के लिये सजा दी जा सके. भाग्य से यह रवैया अब कम होता जा रहा था, लेकिन कुछ समूहों में 1980 के सारे दशक में कायम रहा, और बजाये इस वास्तविकता के कि विश्व के अधिकांश लोग, जो एच आई वी वायरस से संक्रमित थे, विपरीत लिंगकामी थे, और बजाय इस वास्तविकता के कि शोध ने दर्शाया था कि जिस वायरस से एड्स होता था वह बंदरों में पाया जाता था जिन्हें माँस के लिये अफ्रीका के जंगलों पाला जाता था.

क्रमशः.....

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें